Chapter- 1

शुचिपर्यावरणम्

STUDY NOTES

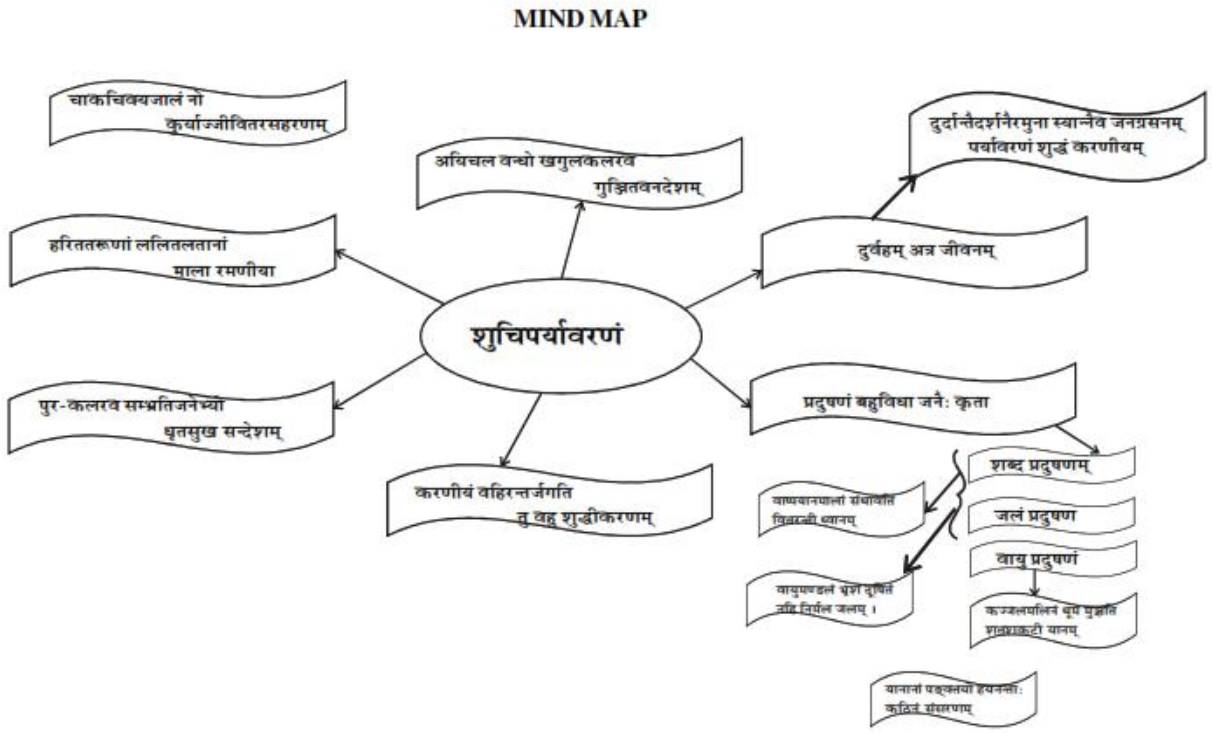

- महानगरस्य परिकल्पना
- मानसिक शारिरीक विकारा:
- यानस्य कारणात् वायुप्रदूषणम् जलप्रदूषणम् च
- ग्रामस्य शोभा वर्णनम्
- वृक्षाङ्गानि वर्णनम्
- पशुपक्षीण: कलरव ध्वनि
- आधुनिक सभ्यताया: वर्जनम्

प्रस्तुत पाठ आधुनिक संस्कृत कवि हरिदत्त शर्मा के रचना संग्रह 'लसल्लतिका' से संकलित है । इनमें कवि ने महानगरों में बढ़ते प्रदूषण पर चिन्ता व्यक्त करते हुए और मानव कल्याण के लिए पर्यावरण शुद्धि व स्वच्छता का संदेश देकर शुद्ध पर्यावरण की ओर जनजागरण करने का प्रयास किया है ।

महानगरों में दिन-रात दौड़ते हुए यातायात साधनों से मनुष्य का शारीरिक व मानसिक ह्रास हो क्या है । इस कारण वहाँ रहना मनुष्यों के लिए दुष्कर हो गया है । काले धुएँ को छोड़ती असंख्य गाड़ियों के कोलाहलपूर्ण मार्गो पर चलना भी कठिन है ।

प्रदूषित वातावरण के कारण वायुमण्डल, जल भोज्य पदार्थ और समस्त धरातल सब कुछ अति दूषित हो गया है । अत: प्रदूषण को दूर कर पर्यावरण को शुद्ध करना चाहिए ।

प्रदूषित पर्यावरण से दु:खी कवि की इच्छा है कि कुछ समय के लिए महानगर से दूर प्रकृति की गोद में एकान्त वन में वास करें, जहाँ पवित्र व शुद्ध जलपूर्ण नदियाँ, झरने और जलाशय हैं । जहाँ पक्षियों के मधुर कलस से वन प्रदेश गुञ्जित हैं । चकाचौंध पूर्ण इस वातावरण से दूर प्राकृतिक दृश्यों को निहारते हुए जीवन को रसमय करना चाहता है ।

कवि की आशंका है कि इस प्रदूषित पर्यावरण में हमारी संस्कृति, प्राकृतिक छटा, पाषाणी सभ्यता लुप्त न हो जाए । सुखमय मानव जीवन की कामना करता हुआ कवि पर्यावरण को शुद्ध व सुरक्षित करने की प्रार्थना करता हैं ।

ODM EDUCATIONAL GROUP Changing your Tomorrow